जैन दर्शन के शैक्षिक विचारों के नारी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का विवेचनात्मक अध्ययन

(Critical study of the relevance of educational ideas of Jain philosophy in the context of women's education)

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

के शिक्षा शास्त्र विभाग में

विद्यावारिधि (Ph.D.) उपाधि

के लिए प्रस्तुत अनुसन्धान प्रस्ताव

(Synopsis)

''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

मार्गदर्शिका

Dr. Sandhya Sharma

अनुसन्धानकर्ता

Amrita Jain

शिक्षा शास्त्र विभाग

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर (राज.)

2022

जैन दर्शन के शैक्षिक विचारों के नारी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का विवेचनात्मक अध्ययन

प्रस्तावना

दर्शन का प्रारम्भ अस्तित्व की जिज्ञासा से होता हैं। जीव और जगत के अस्तित्व को जानने की मनोवृत्ति के दर्शन जगत में विभिन्न आयामों का उद्घाटन किया हैं। जैन दर्शन भारतीय चिन्तन और अध्यात्मिक जीवनशैली का प्रतिनिधि दर्शन हैं।

दर्शन चिंतन की उच्चतम सीमा हैं। प्राचीन भारत में किसी भी प्रकार के चिंतन को दर्शन कहा जाता था । परंतु जैसे जैसे ज्ञान के क्षेत्र में विकास हुआ तैसे तैसे हमने भिन्न भिन्न अनुशासनों को विभाजित करना प्रारंभ किया। ज्ञान की उस शाखा को जिसमें इस ब्रहमाण्ड के अंतिम सत्य की खोज की जाती हैं, उसे हमने दर्शनशास्त्र की संज्ञा दी।

शिक्षा दर्शन

सृष्टि - सृष्टा, आत्मा - परमात्मा, जीव - जगत, ज्ञान - अज्ञान, करणीय तथा अकरणीय कार्यों आदि के संबंध मे दार्शनिकों के अपने मत हैं।

जब शिक्षाशास्त्री शैक्षिक समस्याओं के प्रति जागरूक होते हैं और उसके समाधान के लिए दर्शन का सहारा लेते है तो शिक्षा दर्शन का उदय होता हैं। इस प्रकार दार्शनिक और शिक्षाशास्त्री , दोनों के द्वारा ही शिक्षा दर्शन का निर्माण होता हैं।

शिक्षा दर्शन, दर्शन की वह शाखा है जिसमें हम शिक्षा सम्बन्धी समस्याओं पर दार्शनिक दृष्टिकोण से विचार करते हैं। यह एक प्रयुक्त दर्शन हैं। जब हम विशुद्ध दर्शन के आधारभूत प्रत्ययों तथा सिद्धान्तों का प्रयोग शिक्षा के क्षेत्र में करते हैं तो हम उसे शिक्षा दर्शन कहते हैं।

शिक्षा दर्शन अध्ययन का एक नया क्षेत्र है। दर्शन एवं शिक्षा ने सामाजिक समस्या के सन्दर्भ में चिन्तन करके जोन समाधान दिया, उस पाठ्यवस्तु को शिक्षा दर्शन की संज्ञा दी जा सकती है

दर्शन जीवन की समस्याओं को दार्शनिक दृष्टिकोण से समझने का प्रयास करता है और उसके लिए जो समाधान दिया जाता है, शिक्षा उसको व्यावहारिक रूप देती है।

शिक्षा दार्शनिकों ने शिक्षा दर्शन की परिभाषाएँ इस प्रकार दी हैं-

1. जॉन डीवी— “शिक्षा दर्शन सामान्य दर्शन का एक साधारण सम्बन्ध ही नहीं, अपितु दार्शनिकों ने अब तक सही माना कि वह दर्शन का महत्त्वपूर्ण पक्ष है, क्योंकि शिक्षा प्रक्रिया द्वारा ही ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है।”

2. हैण्डरसन – “शिक्षा दर्शन, शिक्षा की समस्याओं के अध्ययन में दर्शन का प्रयोग है।”

जैन दर्शन

जैन दर्शन भारतीय चिन्तन और आध्यात्मिक जीवन शैली का प्रतिनिधि दर्शन हैं। इसके सिद्धान्त शाश्वत एवम् चीरनवीन हैं, जो समसामायिक तथा प्रासंगिकता की कसौटी पर सदा खरे उतरते हैं।

जैन दर्शन भारतीय दर्शन की वह विचारधारा है जो ब्रहमाण्ड को अनेक द्रव्यों से निर्मित मानती है कि इंद्रियगाह्य वस्तु जगत और अंतःकरण द्वारा अनुभूत आत्मा, दोनों सत्य हैं।

जैन दर्शन जीव और अजीव दोनों की स्वतंत्र सत्ता मानता हैं और यह मानता है कि जीव अपने कर्म के अनुसार अजीव को धारण कर भिन्न - भिन्न योनियों को धारण करता हैं। जैन दर्शन के अनुसार आत्मा मनुष्य योनि को धारण करने के बाद अपने शुद्ध और मुक्त रूप को प्राप्त हो सकती है। बशर्ते मनुष्य रत्नत्रय (सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान, सम्यक चरित्र) से आत्मा को कर्म शून्य कर सके। तब मनुष्य जीवन का यही उद्देश्य होना चाहिए और शिक्षा उसके इस उद्देश्य की प्राप्ति में सहायता करनी चाहिए।

जैन दर्शन और शिक्षा

भारतीय चिंतनधारा में जैन दर्शन की पर्याप्त स्वतंत्रता दृष्टिगत होती है, जो वेदों की सत्ता को स्वीकार नहीं करता है। जैन-दर्शन की मान्यता है कि "ईश्वर की अवधारणा के बिना इस ब्रहमांड के रहस्य को सुलझाना और पूर्णतया प्राप्त कर लेना संभव है।"

शिक्षा से अभिप्राय

जैन-दर्शन के अनुसार जो ज्ञान व्यक्ति को सद्जीवन की और प्रेरित करता है वही विद्या है। जान चाहे सांसारिक हो अथवा धार्मिक अथवा व्यावसायिक, यदि वह व्यक्ति तथा समाज के लिए हितकारी है तो उसे शिक्षा का अंग माना जाएगा अन्यथा नहीं। वह सभी ज्ञान उपयोगी है, जो मनुष्य को सदचरित्र की और प्रेरित करे। जैन दर्शन में शिक्षा उदात्त जीवन हेतु एवं निर्वाण प्राप्ति हेतु सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन एवं सम्यक्-चरित्र की प्रक्रिया है। जैन-दर्शन के अनुसार सम्यन्जान तो अध्ययन द्वारा अर्जित किया जा सकता है परंतु सम्यग्दर्शन का उदय तभी होता है, जब अजान तथा अकरणीय के प्रति विरक्ति होती है, जिसे जैन-दर्शन की शब्दावली में निर्जरा कहा गया है। सम्यक् ज्ञान तथा सम्यक दर्शन का समाहार सम्यक्-चरित्र में होना चाहिए। अहित कार्यों का निवारण तथा हित-कार्यों का आचरण सम्यक्-चरित्र कहलाता है। ज्ञान और श्रद्धा की परिणति आचरण में होनी चाहिए जैन शिक्षा व्यक्ति को पांच महाव्रत,

चार धर्म तथातीन अनुशासन प्रदान करती है। इसके अतिरिक्त यह शिक्षा मनुष्य को सामाजिक तथा व्यक्तिगत जीवन उचित व्यवहार करना सिखाती है।
शिक्षा का तात्पर्य जीवन में चलने वाली ऐसी प्रक्रिया-प्रयोग से है जो मनुष्य को अनुभव द्वारा प्राप्त होते है एवं उसके पथ-प्रदर्शक बनते है। यह प्रक्रिया सीखने के रूप मे बचपन से चलती है एवं जीवनपर्यन्त चलती रहती है। जिसके कारण मनुष्य के अनुभव भण्डार में लगातार वृद्धि होती रहती है।

शिक्षा शब्द संस्कृत के 'शिक्ष्' धातु से बना है, जिसका अर्थ 'सीखना' अथवा 'सिखाना' होता है। शिक्षा का अर्थ आन्तरिक शक्तियों अथवा गुणों का विकास करना है।

शिक्षा का शाब्दिक अर्थ

शिक्षा का अंग्रजी पर्यायवाची शब्द 'Education' है। 'Education' शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'Educatum' शब्द से मानी जाती है। 'Educatum' शब्द दो शब्दों-- 'e' तथा 'duco' से मिलकर बना है। 'e' का अर्थ-- 'out of' और 'duco' का अर्थ है-- 'to lead forth' or 'to extract out'। अतः इस प्रकार से Education' का शाब्दिक अर्थ है-- आन्तरिक को बाहर लाना।

प्राचीन भारत में शिक्षा का अर्थ

प्राचीन भारत में शिक्षा को विद्या के नाम से जाना जाता था। विद्या शब्द की व्यत्पत्ति 'विद्' धातु से हुई है, जिसका अर्थ है 'जानना'। इस तरह विद्या शब्द का अर्थ ज्ञान से है। हमारे प्राचीन ग्रंथों मे ज्ञान को मानव का तृतीय नेत्र कहा गया है जो अज्ञान दूर कर सत्य के दर्शन कराने में मददगार होता है। विद्या हमें विनम्र बनना सिखाती है 'विद्या ददाति विनयम्'। विद्या हमें जीवन से मुक्त कराती है। 'सा विद्या या विमुक्तये'।

शिक्षा का संकुचित अर्थ

संकुचित अर्थ में शिक्षा बालक को योजनाबद्ध कार्यक्रम के अंतर्गत प्रदान किये जाने वाली एक ऐसी योजना है जिसमें निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति के प्रयत्न किये जाते है। विद्यालय में प्रदान की जाने वाली शिक्षा इसी श्रेणी की होती है। इसमें निश्चित उद्देश्यों वाला प्रत्येक कक्षा अथवा स्तर का एक निर्धारित पाठ्यक्रम होता है जिसे एक निश्चित अध्ययनकाल में शिक्षकों द्वारा पूर्ण कराया जाता है। वास्तव में संकुचित अर्थ मे शिक्षा एक प्रकार से पुस्तकीय शिक्षा तक सीमित है।

शिक्षा की परिभाषा (shiksha ki paribhasha)
भारतीय एवं पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दी गई शिक्षा की परिभाषाएं निम्न है--

बौद्ध दर्शन के अनुसार," शिक्षा वह है जो निर्वाण दिलाए

जैन दर्शन के अनुसार," शिक्षा वह है जो मोक्ष की प्राप्ति कराए।"

महात्मा गाँधी के अनुसार," शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक एवं मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा में निहित सर्वोत्तम शक्तियों के उद्घाटन से है।"

अरविंद के अनुसार," शिक्षा का अभिप्राय व्यक्ति की आंतरिक शक्तियों का विकास है।"

स्वामी विवेकानंद के अनुसार," मनुष्य में निहित परिपूर्णता का उद्घाटन करना ही, शिक्षा है। मनुष्य के भीतर ही ज्ञान है, बाहर से कोई ज्ञान नही दिया जा सकता।"

रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार," शिक्षा का आश्य मस्तिष्क को इस योग्य बनाना है कि वह चिरंतन सत्य को पहचान सके, इसके साथ एकरूप हो सके तथा उसे अभिव्यक्त कर सके।"

डाॅ. भीवराव अम्बेडकर के अनुसार," शिक्षा से मेरा तात्पर्य बालक और मनुष्य के शरीर, मन तथा आत्मा के सर्वांगीण एवं सर्वोत्कृष्ट विकास से है।

जैन दर्शन में नारी शिक्षा

जैन दर्शन प्रारम्भ से ही नारी शिक्षा का समर्थक रहा हैं। प्रथम तीर्थंकर आदिनाथजी ने भी अपनी दोनों पुत्रियों ब्राह्मी और सुंदरी को गणित, भाषा, कला व विज्ञान की शिक्षा प्रदान कराई थी। तीर्थंकर आदिनाथजी ने पहले अक्षर व अंक विद्या पहले ब्राह्मी और सुंदरी को दी तत्पश्चात् भरत और बाहुबली को दी।

किसी समाज या राष्ट्र की प्रगति के लिए नारी शिक्षा का विशेष महत्व हैं। नारी शिक्षा का महत्व निर्विवाद रूप से मान्य हैं।

जैन धर्म में नारी का स्थान

जैन धर्म में नारी को सम्मान दिया गया है। नारी को जैन धर्म में उच्च स्थान दिया गया है क्योकि नारी ही नारायण की जननी है।

"नारी गुणवती धत्ते सृष्टि अग्रिमम पद्म" अर्थात् गुणवान नारी सृष्टि में अग्रिम पद धारण करती हैं।

जैन धर्म में नारी को उच्च स्थान दिया गया हैं। जैन धर्म में तीर्थंकरों के समवशरण में नारियोंें को दीक्षित कर आर्यिका बना के उच्च स्थान दिया हैं। भगवान ऋषभदेव ने राज्य अवस्था में अक्षर और अंक विद्या पहले ब्राह्मी और सुंदरी को दी तत्पश्चात् भरत और बाहुबली को दी। आज अक्षर एवं अंक विद्या जो हमें प्राप्त हुई है वो ब्राह्मी और सुन्दरी के प्रताप से हुई हैं तो नारी का इससे बडा स्थान क्या होगा।

नारी शिक्षा का पाठ्यक्रम

पुराणो से विदित होता है कि नारी शिक्षा के दो रुप ़थे एक आध्यात्मिक और दूसरा व्यवहारिक । आध्यात्मिक ज्ञान में वृहस्पति - भगिनी भुवना , अपर्णा , एकपर्णा, एकपाल्ला, मेना ,धारिणी, संनति, शरुपा आदि कन्याओ के नामो का उल्लेख है जो ब्रह्मवादिनी थी। आध्यात्मिक ज्ञान की अभिवृद्धि योग और तप पर निर्भर करती थी जिसमे स्त्री ब्रह्मचर्य,सदाचरण, गृहस्थिक शिक्षा से भी अवगत हुआ करती थी।कौशलपूर्ण नृत्य करती थी और ऋग्वेद की ऋचाओं का गाान भी करती थी।ललित कलाओ में भी निपुण थी।उत्तर वैदिक कालीन व्यवहारिक शिक्षा में वे नृत्य, संगीत,चित्रकला आदि की भी शिक्षा ग्रहण करती थी। प्रमुदाओं की कामनीय भाव भगिनी और आकर्षक नृत्यकला शोभा और सुंदरता का केनरा बिंदु थी। चित्रकला का समुचित विकास हो चुका था। सुस्थ रेखांकन रंगों

का अपेक्षित प्रयोग तथा आकृति का अभिव्यक्तिकरण चित्रकला के प्रधान आधार थे। इस संबंध में अनेक पौराणिक संदर्भ मिलते है। बाणासुर के मंत्री कुष्मांड की कन्या की सखी चिरालेखा ने चित्रपट पर कई देवों, गंधर्वों और मनुष्यों की आकृति का अंकन किया था।

नारी शिक्षा व नारी का महत्व

जैन दर्शन में नारी के माता के रूप को सम्मान प्राप्त था।इस दर्शन में 24वें तीर्थंकरों में से 19वें तीर्थंकर के रूप में मल्लीनाथ नामक स्त्री का नाम लिए जाता था।वही दूसरी ओर नारी को काम वासना का साधन और मोक्ष प्राप्ति का बाधक बताते ह्यूज त्यागने योग्य भी कहा गया है। नारी के प्रति ऐसे दृष्टिकोण के बाद भी उच्चकुल की नारियों के लिए शिक्षा का अच्छा प्रबंध था।तभी तो जैन दर्शन के साहित्य को समृद्ध बनाए के वाली स्थूलभद्र की सात बहनों के नाम विशेष रूप से मिलते है।

शिक्षा का उद्देश्य

जैन दर्शन के अनुसार मनुष्य जीवन का अंतिम उद्देश्य केवल्य हैं।इसके लिए जैन दर्शन ने रत्नत्रय को साधन मार्ग बताया है। तब शिक्षा के मुख्य उद्देश्य यही होने चाहिए। इसके लिए यह नैतिक जीवन की प्राप्ति पर बाल देता है। अतः शिक्षा का एक उद्देश्य भी होना चाहिए। भौतिक जीवन के लिए यह विभिन्न कलाओं के ज्ञान और परमार्थ को आवश्यक समझता है।

1.सम्यक दर्शन का उद्देश्य

जैनाचार्यों का विश्वास हैं की अच्छा भौतिक जीवन जीने एवम आत्मा को कर्मशुण्य कर उसे शुद्ध, बुद्ध और मुक्त करने दोनो के लिए सर्वप्रथम आवश्यकता यह है कि मनुष्यों में जैन तीर्थंकरों, जैन आगम ग्रंथो और जैन आगामी का ज्ञान कराने वाले मुनियों में श्रद्धा हो।

2. सम्यक ज्ञान का उद्देश्य

सम्यक ज्ञान से जैनाचार्यों का तात्पर्य द्रव्य संबंधी उस ज्ञान से हैं जो तीर्थंकरों ने दिया हैं और जो जैन आगामो से संग्रहित है।

3. सम्यक चरित्र का उद्देश्य

जैन दर्शन इस बात पर बाल देता हैं कि सम्यक दर्शन और सम्यक ज्ञान के समाहार सम्यक चरित्र में होना चाहिए। अर्थात मनुष्य को उसे अपने विचार ,वाणी और व्यवहार में उतरना चाहिए।

विभिन्न कलाओं में प्रशिक्षण का उद्देश्य

जैन साहित्य में छोटे बड़े सभी उद्योगों को कला की संज्ञा दी गई है। इन कलाओं में कृषि कार्य , सूत कातना,कपड़ा बनाना, मकान बनाना, चटाई बनाना, धातु के बर्तन बनाना , लकड़ी का सामान बनाना आदि अनेक उद्योगों का उल्लेख हैं।

परमार्थ भाव के विकास का उद्देश्य

जैन दर्शन व्यष्टि हित के साथ साथ समष्टि हित का समर्थक है। यूं तो सम्यक चरित्र वाला व्यक्ति अपने शुभ मंगल और कल्याण के साथ साथ समस्त प्राणियों के शुभ मंगल और कल्याण की बात सोचेगा कहेगा और करेगा। परंतु यहां सांसारिक दृष्टि से भी इसकी आवश्यकता होगी।

शिक्षा की पाठचर्या

जैन दर्शन ने शिक्षा के जो उद्देश्य निश्चित किए गए है उन्हे दो भागों में बांटा जा सकता हैं।व्यावहारिक जीवन संबंधी उद्देश्य और आत्मज्ञान संबंधी उद्देश्य। जैन धर्म ग्रंथ व्यावहारिक जीवन के लिए पाठ्यचर्चा निर्माण के पांच सिद्धांत का उल्लेख मिलता हैं।

1) छात्र की परिपक्वता का सिद्धांत

2) छात्र की क्षमता का सिद्धांत

3) छात्र की आयु का सिद्धांत

4) क्रमागमता का सिद्धांत

5) उपयोगिता का सिद्धांत

शिक्षण विधियां

जैन दर्शन में ज्ञान के स्वरूप एवम उसको प्राप्त करने की विधियों का बड़ा सूक्ष्म वर्णन किया गया हैं। भौतिक ज्ञान के प्राप्त करने के लिए जैन आगमो में निम्नलिखित विधियां का उल्लेख मिलता हैं।

इन्द्रियानुभव विधि

इस विधि में इंद्रियों द्वारा अनुभव करके ज्ञान प्राप्त किया जाता हैं।इसे आज की भाषा में प्रत्यक्ष विधि कहते हैं।

अनुकरण विधि

यह प्रत्यक्ष विधि का ही रूप हैं। इसमें शिक्षक शिक्षार्थी के सामने आदर्श आचरण , आदर्श मौखिक भाषा , आदर्श लिखित भाषा एवम आदर्श विधाएं आदि प्रस्तुत करते है और शिक्षार्थी उनका अनुकरण करते हैं।यह भाषा एवम आचरण सिखाने की स्वाभाविक विधि हैं।

प्रयोग विधि

इस विधि में स्वयं करके सीखा जाता हैं। यह विधि कला की शिक्षा के लिए

उपयुक्त विधि होती हैं।

श्रुति विधि

इस विधि में गुरु से सुनकर ज्ञान प्राप्त किया जाता हैं।

स्वाध्याय विधि

इस विधि में पाठ्य सामग्री से संबंधित ग्रंथो का अध्ययन करके सीखा जाता हैं। इस स्वाध्याय विधि कहते हैं।

1. वाचना

2. प्रच्छना

3. परिग्रहण

4. अनुप्रेक्षा

5. धर्मकथा

अनुशासन

जैन दर्शन में शिक्षक और शिक्षार्थी दोनो के लिए कठोर अनुशासन का प्रावधान किया गया हैं। महावीर स्वामी ने अनुशासन में तप और संयम को बड़ा महत्व दिया हैं।

शिक्षक

जैन साहित्य में शिक्षक के उपाध्याय और आचार्य, दो शब्दो का प्रयोग हुआ हैं।उपाध्याय उसे कहा जाता हैं जो अध्यापन कार्य करता हैं। शिष्यों को भाषा साहित्य एवम अन्य भौतिक विचारों का ज्ञान कराता हैं और आचार्य उन्हे कहा जाता हैं जो शिष्योको धर्म दर्शन और नैतिकता की शिक्षा देता हैं और उनके आचरणों को प्रभावित करता हैं।

शिक्षार्थी

जैन शिक्षार्थी को दो वर्गों में विभाजित करते हैं श्रावक एवम श्रमण । श्रावक वह हैं जो अपने को सांसारिक जीवन के लिए तैयार करता हैं।और श्रमण वह हैं जो अपने को पारमार्थिक जीवन के लिए तैयार करता हैं।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

शोध का यह दूसरा महत्वपूर्ण चरण है। इसके अंतर्गत शोधकर्ता के लिए यह आवश्यक है कि वह चुने गए शोध विषय के संबंध में उन सभी विचारों, पद्धतियों, कठिनाइयों एवं निष्कर्षों का अध्ययन करें जो उससे पूर्व के अध्ययनकर्ताओं द्वारा किए गए हो। शोध चाहे सामाजिक क्षेत्र से संबंधित हो तथा भौतिक विज्ञानों से, यह कार्य सभी शोधकर्ताओं के लिए बहुत आवश्यक होता है। साधारणतया शोधकर्ता अपने अध्ययन विषय से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन किए बिना ही शोध की रूपरेखा को तैयार कर लेते हैं तथा अध्ययन क्षेत्र का निर्धारण करने में अति शीघ्रता प्रदर्शित करते हैं। इसके फलस्वरूप शोध की संपूर्ण प्रक्रिया दोषपूर्ण हो जाती है तथा अक्सर शोध कार्य बीच में ही रुक जाता है। शोध से संबंधित साहित्य का आरंभ में ही अध्ययन कर लेने से शोधकर्ता के लिए न केवल एक दिशा मिल जाती है

सम्बन्धित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बन्धित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान, कोषों, पत्र-पत्रिकाओं, प्रकाशित शोध एवं अभिलेखों से है, जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्त्ता को अपनी समस्या का चयन, परिकल्पना, निर्माण व अध्ययन की रूपरेखा तैयार करने में सहायता मिलती है।

सम्बन्धित साहित्य की परिभाषा

ट्रेवर्स के अनुसार :- ''किसी भी क्षेत्र की समस्याओं एवं तथ्यों से परिचित होने के लिए उस विषय से सम्बन्धित साहित्य को पढ़ना आवश्यक होता है, सम्बन्धित साहित्य की समस्याओं एवं तथ्यों के ज्ञान से शोधकर्त्ता विषय हेतु संगत तथा असंगत बातों की जानकारी प्राप्त करवाता है।

जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार :- ''सम्बन्धित साहित्य समस्त मानवीय पुस्तकों और पुस्तकालयों में उपलब्ध हो सकता है तथा जो जीवधारियों से भिन्न प्रत्येक नई पीढ़ी के साथ पुन: नए सिरे से कार्य प्रारम्भ करते हैं, मनुष्य अतीत से संचित व अद्योलिखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सर्जन करते हैं।''

सम्बन्धित साहित्य के उद्देश्य

साहित्य सर्वेक्षण के अनुसंधान के विषय में वर्णन करते हुए गुड, वार तथा स्केट्स ने प्रमुख उद्देश्य बताएँ हैं, इनका विवरण है :-

1. यह अनुसंधान के लिए सिद्धान्त, विचार, व्याख्याएँ तथा परिकल्पनाएँ प्रदान करता है जो नयी समस्या के चयन में उपयोगी हो सकते हैं।
2. यह अनुसंधान के लिए किए गए क्षेत्र में कार्य कितना और किस प्रकार हो चुका है, इसकी जानकारी देता है।
3. यह परिकल्पना के लिए साधन प्रदान करता है। शोधकर्त्ता प्राप्त अध्ययनों के आधार पर शोध परिकल्पना बता सकता है।
4. चयनित समस्या के लिए किस विधि तथा प्रक्रिया का प्रयोग उपयुक्त होगा? कौन से उपकरण लाना उचित होगा तथा कौन सी सांख्यिकी का प्रयोग करना होगा? इन सबकी जानकारी देता है।
5. यह परिणामों के विश्लेषण में सहायता करता है तथा उपयोग, निष्कर्षों तथा तुलनात्मक तथ्यों को निर्धारित करता है अर्थात् सम्बन्धित अध्ययनों से निकाले गए निष्कर्षों की तुलना की जा सकती है।
6. समस्या के परिभाषीकरण, अवधारणाएँ, सीमांकन तथा परिकल्पना के निर्माण में सहायता करता है।

सम्बन्धित साहित्य की आवश्यकता

1. प्रत्येक अनुसंधानकर्त्ता के लिए यह आवश्यक है कि वह दूसरों द्वारा किए गए शोध के आधार पर अपनी समस्या से सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं से भली-भाँति अवगत हो।
2. शोधकर्त्ता सम्बन्धित साहित्य से अपनी रूचि के अनुरूप शोधकार्य का क्षेत्र चुनता है तथा इस शोध का गुणात्मक तथा मात्रात्मक विश्लेषण शोधकर्त्ता को एक दिशा प्रदान करता है।
3. अध्ययनकर्त्ता साहित्य से शोध की समस्या का चयन करता है तथा साहित्य के पुर्ननिरीक्षण के आधार पर अपनी परिकल्पनाएँ बनाता है तथा अनुसंधान के परिणामों और निष्कर्षों पर वाद-विवाद किया जा सकता है।
4. यह समस्या समाधान हेतु अनुसंधान की समुचित विधि का सुझाव देता है।

5. तुलनात्मक आँकड़ों को प्राप्त करने एवं विश्लेषण करने में सहायक होता है।
6. सम्बन्धित साहित्य समस्या के सीमांकन में सहायक होता है।
7. सम्बन्धित साहित्य का गम्भीर अध्ययन अनुसंधानकर्त्ता के ज्ञानकोष की वृद्धि करता है।

सम्बन्धित साहित्य के स्रोत

सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं के स्रोत से तात्पर्य अनुसंधान विषय में किए गए पूर्व अध्ययनों से होता है तथा इसके लिए शोधकर्त्ता को अध्ययन सामग्री की आवश्यकता होती है। यह अध्ययन सामग्री शोधकर्त्ता की विभिन्न स्रोतों से प्राप्त होती है। स्रोत लिखित एवं संकलित हो सकते हैं, इसके शोधकर्त्ता को उस क्षेत्र में हुए कार्यों के बारे में जानकारी मिलती है, उसकी सूझ एवं अन्त्रतदृष्टि का विकास होता है। सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं के स्रोत दो प्रकार के होते हैं:- 1. प्रत्यक्ष स्रोत। 2. अप्रत्यक्ष स्रोत।

प्रत्यक्ष स्रोत
शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षा साहित्य के रूप में सूचना के प्रत्यक्ष स्रोत इस प्रकार के प्राप्त होते हैं - पत्रिकाओं में उपलब्ध सामयिक साहित्य - शोध से सम्बन्धित जो कार्य हुए हैं उनको साहित्य पत्रिकाएँ, आदि हो सकते हैं, इसका साहित्य नवीन घटनाओं से सम्बन्धित होता है।

1. शोध प्रबन्ध - विषय से सम्बन्धित शोध मिल सकते हैं। शोध वे ही नहीं होते लेकिन उनकी रूपरेखा मिल जाती है।
2. एक ही विषय पर निबंध पुस्तकाएँ, वार्षिक पुस्तकें तथा बुलेटिन - शोध चाहे दार्शनिक हो या सर्वे का लेकिन दोनों में ही सम्बन्धित पुस्तकों को पढ़े बिना शोध कार्य सम्पन्न नहीं किया जा सकता।

अप्रत्यक्ष स्रोत
सूंचना के अप्रत्यक्ष स्रोत अथवा शिक्षा साहित्य के लिए निर्देशिका निम्न रूपों में प्राप्त होती है :-

1. शिक्षा के विश्व ज्ञान कोष।
2. शिक्षा सूची पत्र।
3. शिक्षा सार।
4. पत्रिकाएँ एवं सहायक पुस्तकें।
5. मोनोग्राफ, बुलेटिन एवं वार्षिक पुस्तक

शोध साहित्य का अध्ययन

- **शर्मा एन(1978)** पटना विश्वविद्यालय से जैन साहित्य में शिक्षा की आवश्यकता मनुष्य पर शोध कार्य किया जिसके निम्नलिखित उद्देश्य थे।

1 जैन धर्म के साहित्य द्वारा शिक्षा के मूल्यों का विश्लेषण तथा संश्लेषण करना।

2 जैन धर्म से संबंधित ऐतिहासिक एवं साहित्य ग्रंथों का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

1 जैन धर्म का मुख्य उद्देश्य इस दुनिया से मुक्ति पाना और का मोक्ष प्राप्त करना है।

2 जैन धर्म का दे सम्यक ज्ञान सम्यक दर्शन सम्यक चरित्र से बालक का सर्वांगीण विकास करना है।

3 जैन धर्म मैं ऋषि मुनियों के आश्रम में ही शिक्षक के केंद्र थे।

4 जैन शिक्षा मानव के बहुमुखी विकास के लिए शिक्षा है।

- **जैन कै सी(1980)** ने आधुनिक भारत में भगवान महावीर के शिक्षा दर्शन की प्रासंगिकता पर शोध अध्ययन किया जिसके उद्देश्य थे।

1 शिक्षा के संदर्भ में भगवान महावीर के दर्शन की व्याख्या करना।

2 भगवान महावीर के दर्शन में के निहितार्थ की जांच करना।

3 वर्तमान विद्यार्थियों के शिक्षक शैक्षिक विचारों का विकास करना।

4 व्याप्त समस्याओं का हल खोजने के लिए भगवान महावीर की शिक्षाओं की प्रासंगिकता का अध्ययन करना ।

मुख्य निष्कर्ष

'1जैन धर्म का व्यवहारिक जीवन के साथ संबंध है।

2 जैन धर्म नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों पर विश्वास करता है जो आसानी से मनुष्य के लिए अनुकूल नियम बनाए जा सकते हैं।

3 जैन धर्म में निहित नैतिक मूल्यों को अपने वर्तमान जीवन में अपनाकर अपने जीवन को खु"ाहाल तथा समृद्ध बना सकते हैं।

- **पांडे विवेक(1992)** अ क्रिटिकल स्टडी ऑफ जैनिज्म एंड इट्स फिलोसॉफिकल एंड एजुकेशनअल एप्लीकेशन ,पी .एच.डी ,इलाहाबाद विश्वविद्यालय,

उद्देश्य

1 जैन दार्शनिक विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन करना।

2 जैन धार्मिक विचारों का शिक्षा क्षेत्र में अनुप्रयोग ज्ञात करना।

निष्कर्ष

शोध प्रबंध में यह बताया गया है कि जैन दर्शन में निहित स्यादवाद अनेकांत के सिद्धांत अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्रत्येक वस्तु में जो गुणधर्म होते हैं इनकी विवेचना अनेक प्रकार से की जा सकती है। प्रत्येक वस्तु को अनेक दृष्टिकोण से देखा जा सकता है अतः वस्तु के एक क्षेत्र पर अधिक बल देना चाहिए। जैन दर्शन के मुख्य सिद्धांत पंच महाव्रत तथा ओके अवधारणा को शैक्षिक क्षेत्र में उपलब्ध कराने की महिलाओं को सुलझाया जा सकता है।

- **नंद विजय (1992)** एजुकेशन आइडियाज ऑफ महावीर स्वामी एण्ड रिलेवेन्स ऑफ मॉडर्न इंडिया (पी.एच.डी.) आगरा विश्वविद्यालय, आगरा

उद्देश्य

1 महावीर स्वामी के प्रमुख शैक्षिक विचारों को ज्ञात करना।

2 महावीर स्वामी के शैक्षिक विचारों की वर्तमान भारतीय पंचायत में प्रासंगिकता ज्ञात करना।

निष्कर्ष

शोध प्रबंध में महावीर स्वामी के शैक्षिक विचारों पर प्रकाश डालते हुए बताया गया है कि जैन दर्शन सत्य ,अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चरित्र, जियो और जीने दो की भावना नैतिकता के विकास एवं जीवन की कर्म प्रधान का पर बल देता है। बालिक की विकास का सबसे उच्चतम मार्ग है ।

- **उपाध्याय एसआर (1993)** बालिकाओं के नैतिक निर्णय और मूल्यों पर घरेलू वातावरण और प्रभाव का प्रभाव, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

उद्देश्य

1 बालिकाओं के नैतिक निर्णय पर घरेलू वातावरण व दबाव का अध्ययन करना ।

2 बालिकाओं के मूल्यों पर घरेलू वातावरण व दबाव के प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध में 468 बालिकाओं का न्यायद”ा लेकर तुलनात्मक, सहसंबंधत्मक , वर्णनात्मक अध्ययन किया गया। इसमें निष्कर्ष रूप में यह पाया गया कि सौहार्द पूर्ण और सहायता पूर्ण वातावरण से वैश्विक शांति, वैश्विक में पारिवारिक सुरक्षा ,सामाजिक पहचान, खुशी ,समानता, शक्ति ,आशा, साहस, आत्म नियंत्रण, आत्मसमर्पण आदि मूल्यों के विकास से सहायता मिलती है अतः घर पर वातावरण सौहार्द पूर्ण होने के साथ दबाव रहित होना चाहिए।

- **जैन सुषमा (2013)** पीएचडी शिक्षा वनस्थली विद्यापीठ टॉक

जैन दर्शन में निहित शैक्षिक मूल्यो की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता एवं उपादेयता- एक अध्ययन

उद्देश्य

1 जैन दर्शन के प्रमुख तीर्थंकरों द्वारा दिए गए उपदेशों का गहन अध्ययन करना।

2 जैन दर्शन में निहित शैक्षिक मूल्यों का अध्ययन करना।

3 जैन दर्शन के शिक्षक मूल्यों की वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता एवं उपाय देता का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

1 जैन दर्शन में जीवो के अनेकता में विश्वास करते हुए भी यह सभी आत्मा को एक नहीं मानता अर्थात प्रत्येक छात्र के व्यक्तित्व की विशिष्टता को स्वीकार करता है ।

2 जैन शिक्षा का उद्देश्य व्यक्तित्व का समुचित विकास किस प्रकार करना है कि जिस में सम्यक के प्रति हो श्रद्धा हो भावनाओं का उन्मेष हो तथा चरित्र में ज्ञान व विश्वासी परिणीति हो।

3 ऐसा नारी शिक्षा पर बल, स्त्री पुरुष समानता ,विधवा पुनर्विवाह, नशा विरोधी सिद्धांत ,रात्रि भोजन हेतु प्रधान, चरित्र निर्माण पर बल आदि ऐसी बातें जिन्हें शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों में समाहित कर व्यक्तित्व तथा समाज निर्माण किया जा सकता है।

4 जैन दर्शन के सिद्धांत वर्तमान में प्रजातांत्रिक मूल्यों का विकास करने में सहायक होंगे।

- **राजश्री (2014)** महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य जीवन संतुष्टि एवं समायोजन पर जीवन मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन - पीएचडी शिक्षा, दयालबाग , आगरा

उद्देश्य

1 कार्यरत महिलाओं के जीवन मूल्य मानसिक स्वास्थ्य एवं समायोजन का अध्ययन करना।

2 सामाजिक आर्थिक व शैक्षिक स्तर के संबंध में जीवन मूल्यों का मानसिक स्वास्थ्य जीवन संतुष्टि एवं समायोजन पर प्रभाव का अध्ययन करना।

निष्कर्ष

1 कार्यरत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य जीवन संस्कृति में समायोजन का जीवन मूल्यों के साथ धनात्मक से संबंध पाया जाता है।

2 जिनका रजत महिलाओं में स्वस्थ जीवन मूल्य पाए जाते हैं उनका न केवल मानसिक स्वास्थ्य सही रहता है बल्कि यह घर तथा कार्यालय में सरलता से समायोजन करते हुए जीवन से संतुष्ट पाई जाती है ।

- **तिवारी मधुकर (2002)**
  वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था का समीक्षात्मक अध्ययन, वीबीएस पूर्वांचल यूनिवर्सिटी

उद्देश्य

1 वैदिक ग्रंथों व अन्य प्राचीन ग्रंथों के आधार पर नारी शिक्षा के स्वरूप को उद्घाटित करना ।

2 वैदिक काल की शिक्षा के विभिन्न स्वरूपों में नारियों की भागीदारी का विवेचन करना ।

3 वैदिक काल से शिक्षा व्यवस्था को आलोकित करने वाली विदेशी नारियों का विवेचन करना ।

4 तात्कालिक नारी शिक्षा व्यवस्था से वर्तमान नारी शिक्षा व्यवस्था की तुलना करना

निष्कर्ष

1 वैदिक कालीन शिक्षा की अनौपचारिक व्यवस्था के रहते हुए भी उस काल में नारी आदित्य तेजस्विता था सर्वगुण संपन्न थी।

2 वैदिक काल में नारियों की शिक्षा धार्मिक होती थी आध्यात्मिक ज्ञान प्राप्त करना एवं त्याग तपस्या और उनका प्रमुख विषय था।

3 जो नारी जो औपचारिक शिक्षा के ना होते हुए भी तपस्या त्याग हुए दृश्य से सभी की आदरणीय है

4 नारी शिक्षा की उत्तम व्यवस्था है जो संविधान प्रदत्त निर्देशों के अनुकूल भी है ।

- **शर्मा गिरधारी लाल (2015)**

जैन दर्शन में मूल्य मीमांसा शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में समसामयिक प्रसंगिकता जैन विश्व भारती यूनिवर्सिटी

उद्देश्य

1 जैन दर्शन में तत्व मीमांसा, ज्ञान मीमांसा तथा मूल्य मीमांसा का परिचय करवाना ।

2 जैन दर्शन में मूल्य मीमांसा के स्वरूप का अध्ययन करना।

3 जैन दर्शन में मूल्य मीमांसा के तर्कशास्त्र, सौंदर्यशास्त्र से जुड़े पक्षों का विश्लेषण करना।

4 जैन आचार्य से साक्षात्कार कर जैन दर्शन के मूल्य मीमांसा के व्यावहारिक पक्ष को ज्ञात करना।

5 जैन दर्शन की मूल्य मीमांसा के वर्तमान शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में समसामयिकता प्रस्तुत करना।

निष्कर्ष

1 अन्य भारतीय दर्शनों के भाती जैन दर्शन के अनुसार भी मनुष्य जीवन का परम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति की प्राप्ति है मोक्ष प्राप्ति हेतु जैन दर्शन सम्यक ज्ञान, सम्यक दर्शन, सम्यक चरित्र का प्रावधान है जैन दर्शन में इन्हें जीवन मूल्य मानते हुए ज्ञान, दर्शन, चरित्र की व्यवहारिक व्याख्या की गई है।

2 वर्तमान में शिक्षा जगत में उपस्थित अनेक समस्याएं गुरु शिष्य संबंध में बढ़ती दूरियां, अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार, पर इस अवधि में आने अनैतिकता आदि का समाधान समय दर्शन की

साधना स ही हो सकता है इसके लिए विद्यार्थी, शिक्षक तथा अभिभावकों के दृष्टिकोण में परिवर्तन की आवश्यकता है सही दृष्टिकोण तथा विचार शुद्धि से यह समस्या स्वत: हल हो जाएगी।

3 अन्य भारतीय दर्शनों के भांति जैन दर्शन

दर्शन भी संसार में समस्त दुखों का मूल कारण अविद्या या अज्ञान को मानता है दुखों से छुटकारा पाने तथा शक्ति की अनुमति हेतु अज्ञान दूर होना आवश्यक है तथा अज्ञान को दूर करने का साधन सम्यक ज् ज्ञान की साधना तथा सम्यक ज्ज्ञान को जैन दर्शन में प्रमुख जीवन मूल्य माना गया है तथा सम्यक ज्ञान का जो तात्विक तथा व्यवहारिक विवेचन जैन दर्शन में मिलता है अन्यत्र कहीं नहीं।

- **नीता (2005)**
- जैन धर्म व बौद्ध शिक्षा दर्शन की शिक्षक पढ़ाने का तुलनात्मक अध्ययन

उद्देश्य

1. जैन एवं बौद्ध शिक्षा दर्शन के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. शिक्षा दर्शन के अनुसार शिक्षण विधियां पाठ्यक्रम का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. स्त्री शिक्षा के संबंध में जैन एवं बौद्ध शिक्षा दर्शन के विचारों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

निष्कर्ष

1 जैन एवं बौद्ध दर्शन की शिक्षा निवृति प्रधान है दोनों का उद्देश्य व्यक्तित्व का विकास करना है। जैन शिक्षा व्यक्तित्व के विकास की स्थिति को मोक्ष लेती है तो बौद्ध शिक्षा में, दुखो के अंत को निर्वाण कहती है दोनों का मार्ग अलग-अलग है।

2 पाठ्यक्रम के संबंध में जैन शिक्षा प्राणी के विषय स्पष्ट व सामान्य है लेकिन बौद्ध शिक्षा पर आने के विषयों में विरोधाभास है दोनों दर्शनों के पाठ्यक्रम बहुत ही विस्तृत बताया गया है कि ज्योतिष, व्याकरण इतिहास का अधिक महत्वपूर्ण विषय के रूप में स्थान दिया गया है।

3 दोनों शिक्षा दर्शन की शिक्षण विधियां बहुत ही स्पष्ट एवं पस्ट है, बौद्ध दर्शन की अपेक्षा जैन दर्शन की शिक्षण विधियां विस्तृत स्पष्ट है।

4 जैन शिक्षा दर्शन में स्त्रियों के लिए 64 कलाओं की शिक्षा की बात कही गई है जबकि बौद्ध दर्शन में स्त्रियों के लिए अलग से कोई भी ध्यान नहीं है दोनों शिक्षा दर्शन में स्त्री शिक्षा के लिए स्त्री आचार्य की नियुक्ति की जाती थी जैन शिक्षा दर्शन में स्त्री शिक्षा के विषय विस्तृत थे जबकि बौद्ध दर्शन में स्त्री शिक्षा का कोई स्पष्ट विषय नहीं था

समस्या का औचित्य

मनुष्य द्वारा प्राप्त ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए जिस विधि या प्रक्रिया का सहारा लिया जाता है, वह शिक्षा है। आगम और आगमिक व्याख्या साहित्य के विविध संदर्भों से ज्ञात होता है कि प्राचीन काल में राजवंश एवं धनात् परिवार की महिलाओं को ६४ कलाओं को शिक्षा दी जाती थी ताकि उनका जीवन सौम्य, गौरवशाली बन सके। आगमयुगीन शिक्षा पद्धति का उद्देश व्यक्ति के व्यक्तित्व का समग्र विकास करना था। शिक्षा जीवन के व्यावहारिक ज्ञान तथा चरित्र निर्माण के

पहलु को दृष्टिगत रखकर प्रदान की जाती थी जैन शिक्षा पद्धति में शिक्षा का मूल आधार सम्यक ज्ञान, चरित्र एवं दर्शन की प्राप्ति था जैन ग्रंथों से जात होता है कि उस समय नारी शिक्षा का विशिष्ट विधान नहीं होने पर भी नारियाँ पर पर ही परंपरागत रूप से और संभवत: विद्वानों के माध्यम से शिक्षा प्राप्त जैन के परिप्रेक्ष्य में भारतीय नारी करती थी। नारी को कन्या रूप में बाल्यकाल से माता एवं अन्य पारिवारिक सदस्यों के माध्यम से नैतिक शिक्षा प्राप्त होती थी। धर्मकथाओं के माध्यम से धर्मगुरु एवं साधुसाध्वियों द्वारा नारी को नैतिक आचरण को शिक्षा प्राप्त होती थी पर बालिकाओं के लिए औपचारिक, व्यवहारिक शिक्षा पद्धति प्रचलित होने के उल्लेख नहीं मिलते है। कन्याओं के शिक्षा ग्रहण करने के उपरान्त उनका विवाह किया जाता था।

आगम युग में मौखिक शिक्षा की प्रधानता दी जिसकी दो पद्धतियाँ प्रचलित थी – मौखिक पाठो, प्रवचनो को कंठस्थ करना या लिखित लेखों को एकाग्रचित्त होकर पढ़ना जैनागम के अनुसार ८ वर्ष की आयु में बालक को उपनयन संस्कार के पश्चात विद्याअध्ययन के योग्य माना जाता था। लेकिन स्त्री के संदर्भ में उपनयन संस्कार का कोई वर्णन नहीं मिलता है। जैन पुराणों के अनुसार प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव के समय ब्राह्मी और सुन्दरी को शिक्षित कर नारी शिक्षा की आधारशिला रखी गई। लेकिन इसके बाद स्त्री शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के विशेष संदर्भ नही मिलते है। आगम ग्रंथों में शिक्षार्थी के गुण लक्षण बताये गये है पर स्त्री शिक्षा की स्वतंत्र नियमावली उपलब्ध नही होती ।

समस्त प्रयासों के बाद भी नारी f"ाक्षा का लक्ष्य अभी प्राप्त नहीं किया जा सका हैं। वर्तमान अध्ययन में भाोधकर्ता ने **जैन दर्शन के शैक्षिक विचारों के नारी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का विवेचनात्मक अध्ययन** का अध्ययन करने हेतु चुना गया हैं।

समस्या कथन

जैन दर्शन के शैक्षिक विचारों के नारी शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिकता का विवेचनात्मक अध्ययन

समस्या के उद्देश्य

1) जैन दर्शन में निहित शैक्षिक, सांस्कृतिक,मानवीय और आध्यात्मिक मूल्यों का अध्ययन करना।

2) जैन दर्शन में निहित शिक्षा के पाठ्यक्रम, शिक्षा के उद्देश्यों,शिक्षण विधि,शिक्षक की भूमिका का अध्ययन करना।

3) जैन दर्शन के शैक्षिक मूल्यों के आधार पर नारी शिक्षा की प्रासंगिकता का अध्ययन करना।

4) जैन दर्शन में निहित शैक्षिक, सांस्कृतिक,मानवीय और आध्यात्मिक मूल्यों के आधार पर नारी की भूमिका का अध्ययन करना।

शोध अध्ययन की विधि

वर्तमान शोध में ऐतिहासिक और वर्णात्मक विधि का प्रयोग किया जाएगा।

आकडो का स्त्रोत

अध्ययन की प्रकृति में ऐतिहासिक और वर्णात्मक हैं। इस शोध अध्ययन में डाटा प्राप्त करने के लिए द्वितीयक स्त्रोत को नियोजित किया जाएगा। मुख्य्र रूप से द्वितीयक डाटा स्रोत को नियोजित व उपयोग किया जाएगा।

विभिन्न शोध पत्रिकाओं, लेखों, पुस्तकों, शोध , थीसिस और वेबसाइट से एकत्रित किया जाएगा।

प्राथमिक डाटा व्यक्तिगत अनुभवों एवम गहन अवलोकन द्वारा एकत्रित किया जाएगा।लेकिन मुख्य्र रूप से द्वितीयक डाटा स्त्रोतों का उपयोग किया जाएगा।

शोध अध्ययन की परिकल्पना

प्रस्तुत शोध ऐतिहासिक और वर्णात्मक होने से और शोध की प्रकृति गुणात्मक हैं और शोध में कोई सांख्यिकीय महत्व मौजूद नहीं है। तो परिकल्पना की आवश्यकता नहीं हैं, इसलिए परिकल्पना शून्य है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. गुप्ता एस. पी. तथा अल्का गुप्ता (2008) भारतीय शिक्षा का इतिहास,विकास एवं समस्याये:- इलाहाबाद ,शारदा पुस्तक भवन।

2. माथुर एस.एस. (2014) शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार , विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

3. शर्मा योगेन्द्र कुमार, (2009) शिक्षा के दार्शनिक आधार , कनिष्क पब्लिशनर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स।

4. शर्मा ओ. पी. शिक्षा के दार्शनिक आधार।

5. शशि प्रभा - शिक्षा और मनोविज्ञान मापन और मूल्यांकन।

6. Jain S (2003) – Gender Equality in Education, Community Based intiatives in India.

7.Dr. Kulvinder Pal – Philosophical and Sociological Foundation of Education, Lovely Professional University , Punjab

8.Radhika Kapoor (2019) – Gender Inequality in Edducation, University of Delhi.

9.Sangita Ghosh and Amiot Khundu – Womens participation in Highjer Education in India – An Analysis Across majoir Stataes- Jadapur University, Kolkata , West Bengal.

10.Madhumita Bandhopadhyay and Ramya Subrahmani (2008) Gender equility in Education – A review of Trends and Factors _ National university of Educational Planning and Administration (NUEPA)

11. Jain Sansskrati Ke Pariprekshya me Bhartiya Nari (2019) Dr. Kavita Rajendra Tated- Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.